64th Kerala School Kalolsavam, January 14 to 18, 2026, Thrissur

Item Code: 641 Participant Code: 046

विषय : तो मैं क्या करूँ

जवाब तुम्ह ही हो।

खुशी नही दर्द है,
पानी नही खून है,
नीले आसमान नही काले आसमान है,
युद्ध के कारण।

डर से चिल्लाया सब,
बदूक से दौडा सब,
युद्ध के कारण।

रो रहा बच्चें माँ केलिए,
रो रहा बच्चें खुशी केलिए,
लेकिन अभी भी,
दर्द है उनमें युद्ध के कारण।

वह रो रहा अब
दो घडी शांती केलिए।
लेकिन वह भी नही,
दे रहा उनकेलिए।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

Item Code: 641 Participant Code: 046

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം
തിയ്യതി.................
★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★

मानव कर रहा कर्म थे,
शांती और खुशी केलिए।
लेकिन वह बना रहा,
दर्द और डर के महौल।

पूछ रहा साधु मनुष्य,
तो मैं क्या करूं..?
पूछ रहा साधु मनुष्य
तो मैं क्या करूं शांती केलिए?

उत्तर नहीं शांती केलिए लड़नेवालों के पास,
उत्तर नहीं समुद्र के पास,
उत्तर नहीं इस दुनिया के पास।

लेकिन मत भूल मानव कि
तुम्ही शांती के स्रोत हो,
तुम्ही नाश के स्रोत हो,
तो करो कुछ शांती केलिए।

मत पूछ, मैं क्या करूं?
क्योंकि अब समय आया है
कुछ करने को।
क्योंकि जवाब तो तुम्ही हो।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

तोडों सीमा जो तुम्ह ने बनाया,
तोडों बदूक जो तुम्ह ने बनाया
रिश्ता बनाओ सबसे
भूल जाओ दुशमनी।

तितली कि तरह उडती लडकियाँ,
अब डरता बहार निकलने को।
फूलों जैसा सुन्दर लड़कियाँ
अब मना कर रहा सभी खुशी को।

क्यों कर रहा तुम्ह रोसा ?
पूछना मत उससे तुम्ह।
क्योंकि तुम्हारी समुद्र कि,
काले हाथों ने बनाया उसे रोसा।

दर्द के ऊपर दर्द से,
चिल्लाकर वह पुछा समुद्र से,
तो मैं क्या करूँ...?

जवाब नहीं समुद्र के पास
जवाब नहीं इस दुनिया के पास
क्या क्यों अब गुंगा है ?
क्यों अब सवाल नहीं पुछ रहा ?

मत पूछो, मैं क्या करूँ ?
क्योंकि अंत समय आया है,
कुछ करने को।

उड़ो नीले आसमान में,
चिड़ियों कि तरह।
फैलो सब जगह
फूलों कि तरह।

यह है जवाब,
यह है उस गूंगे समुद्र,
जो तुम्हारी दर्द पर हँस रहते अकेलिए बना जवाब।
यह है तुम्हारी दिलने तुम से पूछा,
सवाल कि जवाब।

हरा भरा पौधे अब नहीं,
पवित्र जल अब नहीं,
सुन्दर फूल भी अब नहीं,
कारण तुम मानव है।

आधुनिकता में अंधा होकर,
बनाया इस प्रकृति का नाश।
~~बनाया~~ प्रकृति की मनोरम बगीया को,
तुम ने बनाई मरघट।

बनाया तुम्हने उसके नाश
दिया तुम्ह ने उसे दर्द के उपर दर्द
फिर भी दिया प्रकृति ने तुम्हे प्यार का सुरक्ष।
लेकिन तुम्ह बनाया उसे,
सबका कारण।
लेकिन मत भूलों ये मानव कि,
तुम्ह है सबका कारण।
तुम्हारा कर्म का फल
तुम्ह ज़रूर ज़रूर सहना पडेगा।
दर्द से तुम्ह रोओगे।
तब तुम्ह पूछोगे
मैं क्या करू ?
तब तुम्हे जवाब देने केलिए
कोई नही होगा।
क्योंकि तुम्ह ही सबका नाश करा होगा।
इसलिए अब समय है,
कुछ करने केलिए।
देखो माँ प्रकृति को झुकका,
और करो उसके सेवा।

क्रोड़ों का नाश के बात भी,
तुम्ह करता नाश ताक फिर भी तो,
मत भूलना मानव ये कि,
तुम्हारी कर्म के फल ज़रूर तुम्हे नाश दिखाएगा।
सब कुछ नष्ट करने के बाद
मत पूछना मानव ये कि,
मैं क्या करूँ?
क्योंकि इन सबका स्रोत,
इन सबका कारण,
सबकुछ तुम्ह ही हो।
सोझ रहा तुम्ह खुद बलवान,
क्योंकि तुम्हारी दिल में दंगा है,
जो तुम्ह से ये सब कर वाया।
इस दंगा केलिए,
काफी है एक तिनका।
तो मत करो मानव नाश
क्योंकि इसके कारण तुम्ह कल पूछोगे,
अब मैं क्या करूँ?

Item Code: 641 Participant Code: 046

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തൃശൂർ ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★
തിരുത്തി....................

तो मैं क्या करूँ ?
पूछा स्त्रीयाँ ।
तो मैं क्या करूँ ?
पूछा बच्चें ।
तो मैं क्या करूँ ?
पूछा मानव ।

इनके जवाब तुम्हारे दिल में है,
इनके जवाब तुम्हारे साथ ही है ।
क्योंकि इसका जवाब
तुम्हारा निर्णय है ।

~~उस ज~~
लेकिन उस जवाब के पीछे चलने को
अभी ही समय मिलेगा
कल नहीं मिलेगा ।

तो मैं क्या करू... ?
~~ये जवाब के~~ ये सवाल के जवाब
तुम्ह ही हो,
तुम्हारा दिल ही है ।